International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 04(II), October - December, 2021, pp.145-148

पर्यावरण एवं आर्थिक विकास

डॉ. संगीता कुमारी*

सार

मानव जितनी तेजी से विकास कर रहा है उतनी ही तेजी से पर्यावरण को दूषित कर रहा है। पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व के हर देश के लिए एक समस्या है। जैसे–जैसे लोगों ने औद्योगिक तरक्की की है वैसे–वैसे पर्यावरण का अवांछनीय दोहन हुआ है। पर्यावरण मंत्रालय की प्रदूषण नियंत्रण संबधि राष्ट्रीय नीति के अनुसार प्रदूषण को आगे न फैलाने के लिए औद्योगिक प्रतिष्ठानों को अनिवार्य रूप से पर्यावरण लेखा परीक्षण कराना होगा। साथ ही सरकार की प्रदूषण नियंत्रण करने वाली तकनीक को भी अपनाना होगा जिससे पर्यावरण को नुकसान न पहुचे। औद्योगिक संस्थानों को पर्यावरण लेखा के अनुरूप औद्योगिक इकाइयों में होने वाले कामकाज व उससे सम्बन्धित पर्यावरण के विभिन्न पहलू की जानकारी देनी होगी। इस नीति के तहत उपयोग में ला रहे कीटनाशकों, केमिकल, और औद्योगिक अपशिष्ट की जानकारी देनी होगी। जो औद्योगिक अपशिष्ट जल में मिलकर जलाशयों को दूषित करते हैं उनको दुबारा रिसाइकिल करके उपयोग करना होगा। कारखानों से निकलने वाले धुँए के लिए औद्योगिक इकाई को फिल्टर लगाने होंगे जिससे हानिकारक तत्व वायु न में मिल सकें। सरकार की तरफ से औद्योगिक इकाईयों के लिए पर्यावरण संबन्धित कड़े नियम लागू किये गये हैं परन्तु बिडम्बना यह है कि सरकार जितना जोर कानून व नीति बनाने में लगाती है उतना उसके कार्यशील होने में नहीं। इसका नतीजा यह है कि पर्यावरण संकट दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है आज के समय का उदाहरण ले तो दिल्ली में वायु प्रदूषण इतना ज्यादा है कि सर्दि में कोहरे के साथ मिलकर उसे और भयानक रूप दे देते हैं। मजबूरी यह भी है कि पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के लिए हम अन्य देशों पर भी निर्भर हैं देश की सामाजिक वनीकरण, प्रदूषण नियंत्रण आदि के लिए हमें विदेशी सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है। यह विदेशी सहायता मुख्य रूप से विश्व बैंक से आती है। तथा यह विदेशी सहायता परोक्ष रूप से अपना हित साधती रही है। पर्यावरण प्रदूषण के लिए समाज के ही लोगों को सामने आकर पहल करनी होगी। एशिया के विकास विशेषज्ञ और पर्यावरण सलाहकार प्रदूषण की समस्या से निपटने के लिए एवं लोगों को जागृत करने के लिए मनोरंजक धारावाहिक का उपयोग कर रहे हैं आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों को और समाज को इस समस्या के बारे में सरल रूप से कैसे समझाया जाए। समाचार पत्र व रेडियो पत्रकारिता में सीमित सफलता के बाद अब यह उम्मीद की जा रही है कि टीवी के माध्यम से यह कार्य किया जा सके। मैक्सिको और ब्राजील जैसे देशों में ऐसे टीवी धारावाहिक काफी लोकप्रिय हुए है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के तहत ''नौ एशियाई देशों ने पर्यावरण के संतुलित विकास के लिए पहल'' नामक कार्यक्रम के प्रभारी ऐनी फोलार्ड का कहना था कि टीवी माध्यम काफी असरकारक होते हैं। हर साल 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाने का कारण भी समाज को पर्यावरण के प्रति जागृत करना है। भारत में दूरदर्शन के माध्यम से जागरूकता का अभियान चलाना चाहिए जिससे सामाजिक दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति बदले। इंटरनेट आदि के माध्यम से छोटी–छोटी पहल करनी होंगी जैसे जल ही जीवन है, पेड़ बचाओ पेड़ लगाओ आदि की सोच समाज में विकसित करनी होगी। इन्ही प्रयासों से पर्यावरण के संतुलित विकास के मुद्दों के बारे में व्यापकता एवं प्रभावी व्यापक रवैया जागृत होगा।

शब्दकोशः *परिस्थितियाँ, प्रदूषण, प्राकृतिकता, उच्छिष्ट, औद्योगिक।*

---

[6] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, देवगढ़ कॉलेज, देवगढ़, बिहार।

प्रस्तावना

पर्यावरण शब्द परि व आवरण का मेल है जिसका शाब्दिक अर्थ हमारे आस पास के वातावरण से है। पर्यावरण में जल, थल, वायु, जीव जन्तु शामिल हैं। पर्यावरण केवल मनुष्य के लिये ही नही अपितु इस पृथ्वी के समस्त जीव जन्तुओं और घटकों के लिए आवश्यक है। पर्यावरण की अवधारण में पर्यावरण में सजीव व निर्जीव सभी घटक व उनके चारों ओर का वातावरण सम्मिलित किया जाता है। और यदि हम प्रदूषण की बात करें तो प्रदूषण जल थल और वायु में होने वाले परिवर्तन से है जो उनकी प्राकृतिकता में परिवर्तन ला दें। भारत के शहरी क्षेत्रों में बढ़ता हुआ वायु व जल प्रदूषण बड़े पैमाने में मृत्यु व बिमारियों का कारण बन गया है। विश्व बैंक का एक अध्ययन बतलाता है कि 1991–92 में भारत के 32 नगरों में 40315 असामयिक मृत्यु प्रदूषण के कारण हुई। भारत के सेन्टर कार साइन्स एण्ड इनवायरमेंट (सी एस ई) ने निष्कर्ष निकाला की प्रदूषण संबंधित कारणों से औसत वार्षिक मृत्यु दर में 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सी एस ई की रिपोर्ट के अनुसार प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य विभाग पर हाने वाल खर्च 19950 करोड रूपये तक आता है पर्यावरण और वन जैसे मंत्रालय होने के बावजूद स्वयं सरकार भी विकास के नाम पर पर्यावरण को हानि पहुँचा रही है नर्मदा बाँध, टिहरी बाँध तक सरकारी इच्छाशक्ति का यह खोखलापन हर जगह देखा जा सकता है। इसका परिणाम उत्तराखण्ड जैसी आपदा के रूप में देखा जा सकता है। पिछले कई सालों में विकास के नाम पर प्रकृति का अवांछनीय तरीके से दोहन हुआ है। साधनों का उपयोग इस प्रकार हुआ है कि हम अगली पीढ़ी को क्या सौपेगें इस बारे में किसी का ध्यान भी नहीं गया। छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखकर जैसे रिसाइकिलिंग आदि के तरीके पर विचार करना होगा जिससे प्रदूषण की समस्या का समाधान हो सके। पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न आयाम–पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के वातावरण से है जिसमें जीव–जन्तु निवास करते है पर्यावरण शब्द का प्रयोग परिस्थान के लिए किया जात है यदि पर्यावरण को किसी तरह की हानि पहुँचती है या उसकी अवस्थाओं में किसी तरीके का परिवर्तन होता है तो उसका सीधा–सीधा असर मनुष्य पर पड़ता है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण सभी को सम्मिलित किया जाता है पर्यावरण प्रदूषण के स्त्रोतों की बात करें तो इसमें प्राकृतिक स्त्रोत व मानव स्त्रोत को सम्मिलित किया जाता है। मानव स्त्रोतों में औद्योगिक स्त्रोत, कृषि स्त्रोत जनसंख्या स्त्रोत आदि को सम्मिलित करते हैं। दुनिया भर की सरकार चाहे वे विकासशील लोकतांत्रिक देश हो या सैनिक तानाशाही की हों या कट्टर धार्मिक पंथों की सरकारें सभी को विभिन्न प्रकार से प्रदूषण स्त्रोतों को कम करना होगा। सभी को एकजुट होकर प्रदूषण की समस्या का निपटारा करने के लिए तकनीक विकसित करनी होगी।

सभी को अपने देश की मिट्टी, पानी, जंगल, खनिज, हवा सभी के प्रदूषकों में कमी करनी होगी जिससे प्रकृति को बिना नुकसान पहुँचाए विकास किया जा सके। विकास गरीबी और बिगड़ते पर्यावरण की इस पेचिदा बहस की आग में यदि आयोग पूरी तरह नही झुलसा है तो उसका मुख्य कारण देश की सभ्यता है जिसमें पर्यावरण के साथ तालमेल मिलकर चलने पर जार दिया गया है। पर्यावरण का अध्ययन सामाजिक संदर्श के संदर्भ में काफी जटिल प्रकिया है। भारत को आजादी मिलने के तुरंत बाद एक ब्रिटानी पत्रकार ने गॉधी जी से सवाल पूछा था कि अब तो आप देश को इंग्लैण्ड जैसे जीवन–स्तर तक उठाना चाहोगे? तो गाँधीजी ने पलटकर जवाब दिया था ऐसी हालत में हमें पूरी दुनिया को गुलाम बनाना पड़ेगा। पश्चिम में औद्योगिक विकास की दर इतनी ज्यादा रही की पर्यावरण की तरफ कभी ध्यान ही नहीं दिया गया। परन्तु जब स्थिती भयानक है कि अब जागृत होकर इस समस्या का निपटारा करना होगा। मारिस एफ. स्ट्रांग के विचार में ''अनेक दृष्टियों से विकासशील राष्ट्रों की पर्यावरण संबंधि समस्याएं तकनीकि दृष्टि से विकसित और सम्पन्न राष्ट्रों की समस्याओं से भी अधिक जटिल और तीव्र हैं उन्हें अभी से ही अनेक पर्यावरण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जबकि उन्हें न तो औद्योगिकरण से प्राप्त लाभ ही उपलब्ध हुए है और न ही उनके पास इन समस्याओं से जूझने के साधन ही उपलब्ध हैं'' और अल्पविकसित देशों में सबसे अधिक प्रदूषण उत्पन्न करने वाला घटक स्वयं गरीबी है। परन्तु गरीबी के अतिरिक्त स्वयं आधुनिक प्रदूषण की समस्या भी वहां अधिक स्पष्ट है। आज एक पिछड़ा राष्ट्र होने के बावजूद भारत में भी शहरीकरण की गति में तेजी से वृद्धि हो रही है सन् 1981 की जनगणना के अनुसार भारत में शहर निवासियों की जनसंख्या 16 करोड़ थी जो इंग्लैण्ड, कनाडा, जापान, फ्रांस या पाकिस्तान की पूरी जनसंख्या से भी अधिक है।

आज भारत में सबसे बड़ी समस्या जल प्रदूषण की है भारत की सबसे पवित्र नदि गंगा आज मैली हो चुकी है। अपितु सरकार द्वारा करोड़ों खर्च करके सफाई का अभियान चलाया जा रहा है परन्तु सभी प्रयास व्यर्थ साबित हो रहे हैं। सभी को एकजुट होकर इस समस्या का समाधान खोजना होगा।

विकासशील राष्ट्रों में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

पर्यावरण प्रदूषण आधुनिक औद्योगिकरण अर्थव्यवस्था की देन है चूंकि अल्पविकसित राष्ट्र अभी भी औद्योगिकरण की दौड में बहुत पीछे हैं अतः इनमें पर्यावरण प्रदूषण की समस्या गंभीर नहीं है। वर्तमान समय में उनकी प्रमुख समस्या तो तेजी से अधिक विकास की है। परन्तु तथ्यतः पर्यावरण प्रदूषण की समस्या केवल विकसित राष्ट्रों तक ही सीमित नहीं है। यदि भारत की बात करें तो जल प्रदूषण व वायु प्रदूषण आम तौर पर बड़ी समस्या बन गई है। कोलकाता के निकट हुगंली में प्रायः 50 औद्योगिक इकाईयां अपना कचरा पानी में मिलाती हैं। कानपुर में पानी में औद्योगिक उच्छिष्ट की दर विकसित राष्ट्रों की तुलना में दुगुनी हैं। बनारस में भारत की सबसे पवित्र नदि में प्रति मिनट 3000 गैलन औद्योगिक उच्छिष्ट डाला जाता है कुछ वर्षो पूर्व तेल रिफाइनरी के द्वारा अपने दूषित पदार्थ गंगा में मिला देने के कारण लोगों की मृत्यु का कारण बनी थी। भाभा एटमिक रिसर्च सेंटर के एक अध्ययन में पता चलता है कि मुम्बई में वायुमंडल में धूल–कण, सल्फर डाई आक्साइड और ऑक्सिडेंट्स की मात्र इतनी अधिक हो गई है इसका लोगों की सेहत, जीव–जन्तुओं आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। दिल्ली की भी यही स्थिति है। कभी–कभी तो धुँए के साथ प्रदूषण मिलकर स्थिति को और भयानक बना देते है। अतः भारत समेत अल्पविकसित राष्ट्रों में धीरे–धीरे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या उग्र होती जा रही है। आज किसी देश में उत्पन्न प्रदूषण केवल उसी देश तक सीमित न होकर अन्य देशों को भी प्रभावित करता है जिसका उदाहरण ओजोन परत के क्षय के रूप में लिया जा सकता है ओजोन परत में छेद के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ गया है जिससे सभी देशों में बाढ़, भूकम्प आदि देखने को मिलते हैं। सभी राष्ट्रो को मिलजुल कर इस समस्या का समाधान करना होगा।

प्रदूषण रोकथामः विकास में बाधा या उत्थान

पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के लिए सभी देशों की सरकारों द्वारा प्रयास किया जा रहा है। आधुनिक औद्योगिकरण की लहर में कारखानों, घरों से निकलने वाली क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसों के कारण ओजोन परत का क्षय हो गया है। ओजोन परत हमारे वायुमंडल के लिए बहुत आवश्यक है। हालांकि वर्ष 1990 में लंदन में हुए सम्मेलन में ओजोन परत की रक्षा के लिए एक कोष बनाने का निर्णय लिया गया जिससे इस कार्य में विकासशील देशों को सहायता दी सके। औद्योगिकरण की नीतियों में बदलाव की पहल सरकार द्वारा की जा रही है पहले केवल औद्योगिकरण पर ही ध्यान दिया जाता था परन्तु अब औद्योगिकरण पर्यावरण को ध्यान में रखकर किया जाता है। जिससे विकास भी हो सके और पर्यावरण को नुकसान भी न पहुँचे। पहले जहाँ औद्योगिक इकाइयों का धुंआ सीधे वायुमंडल को दूषित करता था अब इन इकाईयों को धुंए के लिए फिल्टरेशन तकनीक अपनानी होती है जिससे वायुमंडल को नुकसान पहुचाने वाली गैसों को अवशोषित किया जाता है आज सरकार पेट्रोल और डीजल से चलने वाली कारों और स्कूटरों की अपेक्षा इलेक्ट्रिक वाहनों पर जोर दिया जा रहा है सरकार आज पब्लिक ट्रांसपोर्ट इस्तेमाल करने पर ज्यादा जोर देती है जिससे निजी वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण में कमी हो। आज कम्पनियां भी ऐसे इंजन बना रही हैं जिससे प्रदूषण कम हो। आज वैज्ञानिक भी ऐसी तकनीक अपनाने पर जोर दे रहे है जिससे कम से कम प्रदूषण हो। घरों से निकलने वाले प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार विभिन्न योजना चला रही है। अवैध खनन आदि पर रोक लगाई जा रही है। प्रदूषण रोकने से विकास के दर में कोई कमी नही देखी गई है। बल्कि नए–नए विकल्प जैसे सौर ऊर्जा आदि खोज हुई है। औद्योगिक विकास के लिए प्रदूषण रोकथाम की भी वजह से बाधा का कार्य नहीं करता है।

निष्कर्ष

सही अर्थो में समाज विकास की अवधारणा को सुनिश्चित नहीं कर पाया है। केवल औद्योगिकरण को ही विकास की मान्यता दे रहा है पश्चिमी देशों में औद्योगिक उत्पादन का लाभ समाज कल्याण कार्यक्रमों और

रोजगार के रूप में अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचता है। जबकि भारत बाधों एवं खानों के कारण लाखों लोग बेघर हो जाते हैं। अपितु सरकार द्वारा लगातार कोशिशें की जा रही हैं परन्तु मनुष्य को स्वयं भी इस प्रक्रिया की ओर ध्यान देना होगा। सरकार प्रदूषण रोकने के लिए विभिन्न योजनाएं जैसे पेड़ लगाओ, जल बचाओ आदि पर कार्य कर रही है परन्तु इतनी कोशिशों के बावजूद लगातार प्रदूषण स्तर बढ़ता ही जा रहा है। सरकार और स्वयं समाज भी इस समस्या के प्रति जागृत होने लगा है। आजकल लोग स्वयं भी प्लास्टिक की जगह कपड़े या पेपर बैग का प्रयोग करने लगे हैं स्वयं भी लोग पेड़ लगाने पर ध्यान देने लगे है घरों में लोग तरह–तरह के पेड़ लगा रहे हैं दिल्ली जैसे शहरों में पब्लिक ट्रांसपोर्ट का प्रयोग करने लगे है लोगों में पेट्रोल डीजल की गाड़ी छोड़कर इलेक्ट्रिक कारों का वर्चस्व देखने को मिलता है। कई देशों में लोग हफ्ते में एक दिन साईकिल से ऑफिस जाने का चलन है। कई देशों में प्लास्टिक में पूर्णतः बैन लगा दिया है। अतः प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं सच्चाई यह है कि विकास और पर्यावरण के संघर्ष को समाप्त नहीं किया जा सकता अपितु तालमेल मिलाकर कम से कम किया जा सकता है। पर्यावरण के भाव में ही हमारा विकास सम्भव है इस पृथ्वी पर आज हम जीवन यापन कर रहे हैं यह पर्यावरण की ही देन है। पर्यावरण की सुरक्षा हेतु पर्यावरण दिवस बनाया गया है। इस दिन लोगों को अपशिष्ट पदार्थो और अवांछनीय तत्वों से पर्यावरण बचाने और इसकी सुरक्षा के लिए जागरूक किया जाता है। हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है सरकार के बनाए पर्यावरण नियमों का पालन करने की जरूरत है जिससे इस समस्या का निपटारा हो सके। हमें पर्यावरण को प्रदूषित करने तथा कचरा और धूल के कणों और अवांछित तत्वों के मिलने से रोककर हमें नए पेड़ पौधे लगाकर पर्यावरण को सुन्दर और प्रदूषण रहित बनाना होगा जिस तरह हम अपने घर की स्वच्छता का ध्यान रखते हैं उसी तरह सम्पूर्ण पृथ्वी को घर मानकर इसकी स्वच्छता का ध्यान रखना होगा। पर्यावरण प्रकृति का अनूठा उपहार है हमें ये सुविधा देता है इसलिए हमें भी इसे बनाए रखना जरूरी है। पर्यावरण की सुरक्षा ही हमारी सुरक्षा है। यदि अभी हम पर्यावरण के बारे में ध्यान से नहीं सोचेंगे तो हम अपनी आने वाली पीढ़ीयों को क्या दे पायेंगे? इसलिए पर्यावरण को स्वयं की जिम्मेदारी मानते हुए कार्य करने चाहिए क्योंकि जैसा कि कहा गया है पर्यावरण स्वच्छ तो हवा, पानी, मृदा स्वच्छ। स्वच्छता ही जीवन में आनन्द लाती है। पर्यावरण को सुन्दर व स्वच्छ बनाये बिना हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बालेन्दु दाधीचः क्या वह रहने लायक धरती होगी? जनसत्ता नई दिल्ली, डाक संस्करण, 4 जून 1989
2. श्रीधर पाण्डेयः आर्थिक विकासः सिद्धान्त, समस्याएं और नीतियां मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 2004, पृ. 837
3. अमित राय चौधरीः लीभिंग 'डेंजरसली', दी स्ट्रेटमैन, कलकत्ता डाक संस्करण, 6 जून 1999
4. श्रीधर पाण्डेयः वन, पर्यावरण और आर्थिक विकास, नव आर्थिकी जिल्द 5, 1995
5. अनिल अग्रवालः विकास की कीमत, जनसत्ता, नई दिल्ली डाक संस्करण, 5 मार्च 1999
6. श्रीधर पाण्डेयः एजेज इन इकोनोमिक्स, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 2002, पृ. 101
7. श्रीधर पाण्डेयः एजेज इन इकोनोमिक्स, मोतीलाल बनारसीदास, पटना, 2002, पृ. 102
8. राजीव बूल चन्दः 'विनाश को न्यौता देता विकास' जनसत्ता, हिन्दी दैनिक, नई दिल्ली, डाक संस्करण, 6 जून 1991
9. श्रीधर पाण्डेयः सिगनीकीफेन्स ऑफ इनवायरमेंटल एजुकेशन इन इण्डिया, नव आर्थिकी, जिल्द 7, अंक 2 1997 से उद्घृत।

❖◆❖